श्री अष्टलक्ष्मी स्तोत्रं

॥ आदिलक्ष्मी ॥

सुमनसवंदित सुंदरि माधवि
चंद्र सहोदरि हेममये ।
मुनिगणमंडित मोक्षप्रदायिनि
मंजुळभाषिणि वेदनुते ॥

पंकजवासिनि देवसुपूजित
सद्गुणवर्षिणि शांतियुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
आदिलक्ष्मि सदा पालय मां ॥ 1॥

॥ धान्यलक्ष्मी ॥

अहिकलि कल्मषनाशिनि कामिनि
वैदिकरूपिणि वेदमये ।
क्षीरसमुद्भव मंगलरूपिणि
मंत्रनिवासिनि मंत्रनुते ॥

मंगलदायिनि अंबुजवासिनि
देवगणाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
धान्यलक्ष्मि सदा पालय मां ॥ 2॥

॥ धैर्यलक्ष्मी ॥

जयवरवर्णिनि वैष्णवि भार्गवि
मंत्रस्वरूपिणि मंत्रमये ।
सुरगणपूजित शीघ्रफलप्रद
ज्ञानविकासिनि शास्त्रनुते ॥

भवभयहारिणि पापविमोचनि
साधुजनाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
धैर्यलक्ष्मि सदा पालय मां ॥ 3॥

॥ गजलक्ष्मी ॥

जयजय दुर्गतिनाशिनि कामिनि
सर्वफलप्रद शास्त्रमये ।
रथगज तुरगपदादि समावृत
परिजनमंडित लोकनुते ॥

हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित
तापनिवारिणि पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
गजलक्ष्मि रूपेण पालय मां ॥ 4॥

॥ संतानलक्ष्मी ॥

अहिखग वाहिनि मोहिनि चक्रिणि
रागविवर्धिनि ज्ञानमये ।
गुणगणवारिधि लोकहितैषिणि
स्वरसप्त भूषित गाननुते ॥

सकल सुरासुर देवमुनीश्वर
मानववंदित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
संतानलक्ष्मि त्वं पालय मां ॥ 5॥

॥ विजयलक्ष्मी ॥

जय कमलासनि सद्गतिदायिनि
ज्ञानविकासिनि गानमये ।
अनुदिनमर्चित कुंकुमधूसर-
भूषित वासित वाद्यनुते ॥

कनकधरास्तुति वैभव वंदित
शंकर देशिक मान्य पदे ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
विजयलक्ष्मि सदा पालय मां ॥ 6॥

॥ विद्यालक्ष्मी ॥

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि
शोकविनाशिनि रत्नमये ।
मणिमयभूषित कर्णविभूषण
शांतिसमावृत हास्यमुखे ॥

नवनिधिदायिनि कलिमलहारिणि
कामित फलप्रद हस्तयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
विद्यालक्ष्मि सदा पालय मां ॥7॥

॥ धनलक्ष्मी ॥

धिमिधिमि धिंधिमि धिंधिमि धिंधिमि
दुंदुभि नाद सुपूर्णमये ।
घुमघुम घुंघुम घुंघुम घुंघुम
शंखनिनाद सुवाद्यनुते ॥

वेदपुराणेतिहास सुपूजित
वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनि
धनलक्ष्मि रूपेण पालय मां ॥ 8॥